Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

मध्यकालीन जैन मंदिरों की भव्यता के हृदयहारी दृश्य : एक ऐतिहासिक अध्ययन (राजस्थान के पाली जिले के विशेष संदर्भ में)

शेषा राम [1]

[1] सहायक आचार्य (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय अन्टाली, भीलवाड़ा, (महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय), राजस्थान।

ABSTRACT:

सृष्टि के आरंभ से मानव सभ्यता से ओतप्रोत, प्राकृतिक सौंदर्य से व्याप्त विविध घटनाओं, प्रसंगों, तथ्यों, सूचनाओं आदि को उनके वैशिष्ट्य के साथ विभिन्न ताम्रपत्रों, अभिलेखों, शिलापट्टों, भित्तिचित्रों आदि के साथ साथ स्वर्णिम पृष्ठों पर अंकित किया गया। यह तथ्यात्मक अंकन ही इतिहास के रूप में जाना गया। ये इतिहास एक पल की कहानी नहीं वरन युगों युगों से चली आ रही विविध मानव मेधाओं का गम्भीर चिंतन है जो अक्षरों में अंकित होता चला गया है। जिसमें प्रत्येक युग के उतार चढ़ाव, सौंदर्य, संस्कृति, जीवन शैली, वेशभूषा, भाषाएँ सभी कुछ निहित होता है जो इतिहास के रूप में देखा जाता है। संभवतः ऋषियों तथा हमारे पूर्वजों द्वारा अर्जित अनुभव एवं उनकी जीवन शैली का प्रसंगशः अंकन ही इतिहास है। यह अनुभव एवं जीवन शैली मनुष्य ने अपने वर्तमान रहते हुए ही किया अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक इतिहास पुरूष ने अपने जीवन की आध्यात्मिक तथा ऐतिहासिक उपलब्धियों का उल्लेख विभिन्न प्रकार से किया है। यह उल्लेख प्रस्तर-खण्डों, ताम्र, रजत, स्वर्ण पत्रों, शिलालेख, मुद्राएँ, सिक्के, स्मारक, दुर्ग, हवेलियाँ, कूप-वापी, मन्दिर आदि के रूप में दृष्टिगोचर होते है। इसी इतिहास का एक हिस्सा है कला।

मानवीय भावनाओं ने जब अपने दुखों से उबरने के लिए शांतचित्त होकर उस सर्वशक्तिमान ऊर्जा का चिंतन किया होगा तब उसे किसी आकार प्रकार में कल्पित किया होगा, उसके लिए एक भव्य स्थान का दृश्य सजोया होगा जिसको सकारात्मक रूप प्रदान करने के लिए उसने मंदिरों का निर्माण किया होगा। इन मंदिरों में व्याप्त ईश्वरीय भावनाओं के चित्र मूर्तिकला, स्थापत्य कला, भित्तीय कला आदि के रूप में दिखाई देते हैं। जिनमें राजस्थान के पाली जिले के जैन मंदिर भक्ति के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उसमें भी पाली जिले के जैन मंदिरों की भव्यता अपने आप में अत्यधिक हृदयहारी है। इन मंदिरों का एक-एक दृश्य मानव मन को मोहित कर लेने वाला है। इन मंदिरों का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यधिक महत्व है।

KEYWORDS:

मध्यकालीन जैन मंदिर, भव्यता, मनोहर, हृदयहारी दृश्य, ऐतिहासिक, सामाजिक, अध्ययन, राजस्थान, पाली।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
28th March 2024	30th March 2024

प्रस्तावना:-

पाली जिला 24° 45' से 26° 74' उत्तरी अक्षांश तथा 72° 48' से 47° 2' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है, उत्तर से दक्षिण में इसकी अधिकतम चौड़ाई 266 किलोमीटर है। उत्तर में जोधपुर व नागौर, उत्तर-पूर्व में अजमेर, दक्षिण-पूर्व में उदयपुर, दक्षिण-पश्चिम तथा पश्चिम में सिरोही व जालोर जिसे पाली की सीमा का निर्माण किया गया है।

'एनाल्स एण्ड एण्टिक्विटीज ऑफ राजस्थान में टॉड लिखते है कि- "दीवारों से घिरे इस नगर में तिब्बत एवं उत्तरी हिन्दुस्तान से विविध सामग्रियां इकट्ठी होती थी। टीन के बक्से और लोहे के सन्दूक, बन्दूकें, तलवार तथा युद्ध के अनेक शस्त्र बनते थे, जिसका अरब, यूरोप एवं अफ्रीका तक निर्यात होता था। 75,000 रू. वार्षिक चुंगी जमा होती थी"।

पाली जिला सीमा के दृष्टिकोण से उत्तर में नागौर, उत्तर-पूर्व में अजमेर, पूर्व में राजसमन्द, दक्षिण-पूर्व में उदयपुर दक्षिण-पश्चिम में सिरोही, पश्चिम में जालोर और बाड़मेर तथा उत्तर-पश्चिम में जोधपुर स्थित है। यह जिले राजस्थान के आन्तरिक जिलों में स्थान रखते है अतः पाली से अन्य जिलों से आवागमन की दृष्टि से यातायात के साधन सरलता से प्राप्त हो जाते है। जिस प्रकार राजस्थान के आठ जिलों की सीमाएँ पाली को स्वयं में समेट लेती है, ठीक उसी प्रकार अरावली पर्वत श्रृंखला की योटियाँ इस जिले को त्वयं में समाहित कर लेती है। यहाँ की नूनि अरावली की छितरी हुई पर्वत श्रृंखलाओं से स्वयं को ओतप्रोत किए हुए है।

इस प्रदेश में वर्षभर प्रवाहित होने वाली एक भी नदी नहीं है। तथापि मुख्य नदी के रूप में एकमात्र 'लूणी नदी का नाम आता है जो बरसाती नदी है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाये तो यह चौहानों को विभाजित करती हुई भौगोलिक सीमा का निर्माण करती है। इसके पूर्वी भाग सुइगाम का राज तथा पश्चिमी भाग पारकर कहलाता है। इस प्रकार राजस्थान का पाली जिला भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अपने आप में अत्यधिक विशिष्ट स्वरूप को धारण करता है और जब उसके अंतस में व्याप्त मंदिरों की भव्यता की ओर दृष्टि डाली जाए तो पाली जिले का सौंदर्य उत्कृष्ट का एक अद्भुत प्रतीक है।

मध्यकालीन जैन मंदिरों की भव्यता के हृदयहारी दृश्य

मंदिर वह पवित्र स्थल है जहां व्यक्ति अपनी सद्भावनाओं को अपने ईष्ट के प्रति समर्पित करने के लिए आता है। मंदिर का शाब्दिक अर्थ तो घर है लेकिन वह घर मनुष्य का न होकर संसार में व्याप्त बुराइयों को दूर करने वाले ईश्वर का घर होता है जहां पहुंचकर प्रत्येक हृदय को शांति मिलती है। अपनी समस्याओं का समाधान मिलता है। एक आंतरिक आनंद की अनुभूति होती है। मन के अहंकार तथा दुर्विचारों के स्थान पर सद्भावना की वृद्धि होती है। व्यक्ति पूर्ण पवित्र और स्वच्छता के साथ अपने ईष्ट का स्मरण करता है। अपनी वेदना, अपने हर्ष, अपनी समस्याओं सभी की अभिव्यक्ति के लिए वह मंदिर में प्रवेश कर अपने ईश्वर का अभिवादन करता है, अभिनंदन करता है और विभिन्न रूपों में उसकी स्तुति करता है। यह मंदिर विभिन्न धर्म, संस्कृति और संप्रदायों की अभिव्यक्ति के रूप में भिन्न-भिन्न स्वरूप को धारण करते हैं जो उन उनके रूप में विशेष भावनाओं को प्रतिबिंबित करते हैं। इस श्रृंखला में यदि जैन मंदिरों की ओर दृष्टि डाली जाए तो जैन मंदिरों में व्याप्त आध्यात्मिक ऊर्जाएं अपने आप में अपूर्व सौन्दर्य को धारण करने वाली हैं।

स्वर्ण जैन मन्दिर फालना, रणकपुर:-

अरावली की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य स्थित स्वर्ण मन्दिर मन को हर्षित करने वाला है। यह स्वर्ण मन्दिर जयपुर-अहमदाबाद रेलवे लाईन पर राजस्थान के पाली जिले में फालना कस्बे में स्थित है। इस मन्दिर का निर्माण वि.सं 1970 में करवाया गया था सर्वप्रथम मूर्तियों की प्रतिष्ठा भट्टारक आचार्य मुनिचन्द्र सूरीश्वर ने की थी। मन्दिर के दीवार, स्तम्भ तथा गुम्बद आदि पर स्वर्ण परत चढ़ी हुई हैं। कहा जाता है कि, यह स्वर्ण यहां की स्थानीय कुडारा गांव की महिलाओं द्वारा दान दिया गया था। इसके शिखर पर 90 किलो स्वर्ण चढ़ा हुआ है। इस मन्दिर की मुख्य विशेषता यह है कि जैन मन्दिर में प्रतिमा निमोण का कार्य जयपुर के मुस्लिम कलाकारों द्वारा किया गया जो समाज में साम्प्रदायिक सौहार्द्र का प्रतीक मानी जाती है। इस मन्दिर में पार्श्वनाथ जी के अतिरिक्त शीतलनाथ जी, महावीर जी, ऋषभदेव जी, पदम्प्रभुजी,

गौर-गणेश, नाकोड़ा भैरव जी की संगरमर की मूर्तियों स्थापित है। इस मन्दिर को गेटवे ऑफ गोडवाड व मिनी मुम्बई के नाम से भी जाना जाता है।

स्वर्ण जैन मन्दिर, फालना, रणकपुर।

रिखी भाखरी (ऋषि पर्वत) नाडोल का महावीर स्वामी का मन्दिर:-

राजस्थान प्रान्त के पाली जिले में जोधपुर उदयपुर मेगा हाईवे पर सोमेसर रेलवे स्टेशन से 22 कि.मी. दूर भारमली नदी के किनारे 25 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 73 डिग्री देशान्तर पर तथा रानी रेलवे स्टेशन से 18 कि.मी. दूर पूर्वोत्तर कोठा में देसूरी से 17 कि.मी दूर, उत्तर-पश्चिम दिशा में जवालिया रेलवे स्टेशन से 13 कि. मी दूर तथा नाडलाई से 11 कि.मी. उत्तर-पूर्व में स्थित हैं। यह क्षेत्र प्राचीन "गोडवाड" की राजधानी था। इसकी स्थापना 6वीं शताब्दी के लगभग मानी गई है। यह भूभाग ईसा की 10वीं शताब्दी तक "सप्तशत जनपद" कहलाता था। यह कस्बा, गोडवाड़ (मारवाड़) के जैन पच्चतीर्थों में एक प्रमुख तीर्थ माना गया है। जैन धर्म के प्रभाव की व्यापकता को दर्शाते हुए कहा गया है कि -

'सिसोदिया, सांडेसरा, चौद शिया चौहान,

चैत्यवासियो चावड़ा, गुलगुरू एह प्रणाम'

इस मंदिर के गूढ़ मण्डप में नेमिनाथ और शांतिनाथ की दो कायोत्सर्ग प्रतिमाओं का चित्रण मिलता है। 1158 ई. के शिलालेख से ज्ञात होता है कि ये प्रतिमाएँ देव सूरि के शिष्य पद्मचन्द्र गणी द्वारा वेसड़ स्थान के महावीर मन्दिर में स्थापित की गई थी।"

रिखी भाखरी (ऋषि पर्वत), महावीर मन्दिर, नाडोल, राजस्थान।

राता महावीर (हथूण्डी) का जैन मन्दिर

रता महावीर तीर्थ भारत के राजस्थान के पाली जिले में स्थित एक प्रसिद्ध जैन तीर्थस्थल है। जो बीजपुरा में पांच किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में स्थित है। इसका प्राचीन नाम 'हस्तिकुंडी' था। यह मंदिर भगवान महावीर को समर्पित है, जिन्हें जैन धर्म में 24वें तीर्थंकर के रूप में जाना जाता है। मंदिर परिसर में आकर्षक नक्काशीदार स्तंभों और सुंदर मूर्तियों के साथ एक शानदार संगमरमर की संरचना है। हथुण्डी में राष्ट्रकूटों के शासन के पश्चात् मुगल आक्रमण तथा विध्वंस के फलस्वरूप, इस मन्दिर के मूलनायक ऋषभनाथ के स्थान पर भगवान महावीर स्वामी हो गये 1242 ई. में जैनाचार्य पूर्णभद्र उपाध्याय ने दो कक्ष तथा शिखर का निर्माण करवाया तथा इसी कालक्रम के समय यहां महावीर स्वामी की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गयी जो "राता महावीर" के नाम से प्रसिद्ध हुई थी। यहां स्थापित मूल नायक की प्रतिमा लाल रंग की होने कारण कालान्तर में "राता महावीर" के नाम से प्रसिद्ध हुई।

राता महावीर जैन मन्दिर, हथूण्डी

मूंछाला महावीर मन्दिर, घाणेराव (पाली)

पाली जिले के घाणेराव कस्बे से तीन मील दूर, अरावली की सुरम्य प्रकृति की गोद में स्थित भगवान महावीर की मूर्ति को मूंछाला महावीर के नाम से जाना जाता है। मूंछाला महावीर नाम के पीछे किंवदन्ति प्रचलित है कि, "एक बार मेवाड़ के महाराणा शिकार पर गये थे, थकान तथा प्यास के कारण इस मन्दिर में विश्राम करने ठहरे तथा मन्दिर के पुजारी से जलपान का आग्रह किया तब पुजारी ने उसे भगवान का प्रसाद (जल) दिया। महाराणा जल में बाल देखकर क्रोधित हो गये तथा कहा कि तुम्हारे भगवान के मूंछे हैं? यह सुनकर पुजारी भयभीत हो गया और घबरा कर हॉ कह दिया तो राणा ने कहा कि हम प्रतिमा के दर्शन करना चाहते है, तो पुजारी ने सकारात्मक उत्तर देते हुए कहा कि तीन दिन बाद करे, तब राणा ने पुजारी की शर्त स्वीकार कर कहा कि वह तीन दिन बाद लौटेगा, और भगवान की दाढ़ी-मूछे देखना चाहेगा। तत्पश्चात् पुजारी ने मन्दिर में मूर्ति के समक्ष आसन लगाकर दो दिन तक प्रार्थना करता रहा। जब उसे कोई सुखद परिणाम प्राप्त नहीं हुआ तो उसने मंदिर में भैरों के अस्त्र (खंजर) से स्वयं की हत्या करना चाहा, तब भगवान स्वयं प्रकट होकर आशीर्वाद दिया कि मूर्ति को वस्त्र से ढक ले और महाराणा से वस्त्र को हटाने की प्रार्थना करे। अगले दिन महाराणा मन्दिर आये तब पुजारी ने उसका स्वागत करना चाहा तो राणाजी बोलें हमें मूर्ति के दर्शन करने है। जब राणाजी मन्दिर के गर्भगृह में स्थित मूर्ति के वस्त्र उठाकर देखा तो आश्चर्यचकित हो गये कि भगवान महावीर की मूर्ति के दाढ़ी-मूंछे थी तब राणाजी को पुजारी के उपहास का पश्चात् हुआ और पुजारी से क्षमा मांगी। तब से यह मन्दिर मूंछाला महावीर मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है"।

मूंछला महावीर जैन मन्दिर, घाणेराव, पाली

वास्तुकला की दृष्टि से देखा जाए तो सो यह अद्भुत सौंदर्य से युक्त मंदिर नागर वास्तुकला में बनाया गया है। मंदिर की एक घुमावदार अधिरचना है जो कई बुर्जों और सुसज्जित स्तंभों से मण्डित है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक जटिल नक्काशीदार तोरण है और मंदिर के द्वार के बाहर दोनों ओर हाथी की दो बड़ी काले रंग की मूर्तियाँ हैं। यह मंदिर विस्तृत गुफाओं के लिए प्रसिद्ध है।

रणकपुर जैन मन्दिर:-

रणकपुर जैन मन्दिर उत्तरी भारत का अद्वितीय श्वेताम्बर जैन तीर्थ ही नहीं अपितु कला का अद्भुत नमूना है। यह मन्दिर पाली जिले की देसूरी तहसील में सादड़ी से 6 मील दूर पश्चिमी रेल्वे की छोटी लाइन पर, आबू रोड़ व अजमेर के मध्य, फालना से लगभग 22 मील की दूरी पर हरियाली पहाड़ी घाटी की गोद में स्थित है।

यह मन्दिर 48,000 वर्ग फुट भूमि पर निर्मित किया गया। इसके तलीय भाग में सेवाड़ी का

पत्थर तथा दीवारों पर सोनाणा का पत्थर उपयोग में लाया गया है। शिखर के भीतरी भाग ईंटों से तथा प्रतिमाएँ भी सोनाणा के पत्थर से निर्मित की गयी है भगवान आदिनाथ की दिव्य प्रतिमाएँ श्वेत संगमरमर (मकराना) की बनी हुई है। एक उच्च पीठिका पर आसानी आदिनाथ की चतुर्मुखी प्रतिमाएँ पांच फूट ऊंची व एक-दूसरे की पीठ से लगी हुई, चारो दिशाओं में मुख किये हुये है। चारों और द्वार होने से प्रवेश करते ही मूलनायक मूर्ति के दर्शन स्वतः हो जाते है।

आदिनाथ भगवान की यह मूर्ति अलौकिक आभा फैलाती है हरियाली के मध्य स्थित मन्दिर सौन्दर्य का अद्वितीय नमूना है। रणकपुर के मन्दिर मे बने रंगमण्डप में बने तोरण अत्यन्त आकर्षक है। ये तोरणद्वार एक ही पत्थर से निर्मित है, जिस पर सूक्ष्म तक्षण कला की आकृतियाँ अत्यन्त रौचक है। मन्दिर के रंगमण्डप में स्थित गुम्बद के घेरे के चारों ओर, नृत्यरत- 16 पुतलिकाएँ की आकृतियों तथा उनकी भाव-भंगिमाएँ मनोहर है।

रणकपुर जैन मंदिर पाली, राजस्थान।

इस प्रकार पाली जिले में स्थापित विभिन्न जैन मंदिर अपनी भव्यता और सौंदर्य के कारण संपूर्ण जैन संस्कृति में विशेष स्थान रखते हैं। प्रायः सभी जैन मंदिर एक बड़े भूभाग पर निर्मित हैं। सभी में नक्काशी को प्राथमिकता दी गई है। सभी का शिल्प सौंदर्य एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से विशेष महत्व है। यह जैन मंदिर न केवल जैन संस्कृति, धर्म, दर्शन और भक्ति के आगार हैं वरन मध्यकालीन कला के अद्वितीय नमूने हैं। इन मंदिरों में स्थापित 24 तीर्थंकरों की मूर्तियां अपनी सौम्यता एवं सत्य ऊर्जा से व्याप्त होकर सजीव प्रतीत होती हैं। जिनके दर्शन करने के लिए न केवल भारतवासी वरन संपूर्ण विश्व से आगंतुक आकर आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति करते हैं।

निष्कर्ष

सार रूप में कह सकते हैं कि, राजस्थान के पाली जिले में स्थित प्रमुख जैन मंदिर अपनी अद्भुत कला के कारण संपूर्ण विश्व में प्रसिद्धि को प्राप्त हैं। इन मंदिरों की भव्यता ऐतिहासिक पृष्ठों पर अपनी विशिष्टता को युगों युगों तक अभिव्यक्त करती रहेगी। इनके अतिरिक्त भी पाली जिले में और बहुत से जैन मंदिर हैं जो कि जैन समुदाय की संस्कृति, सौंदर्य धर्म भावना, दर्शन आदि सभी को एक माला में पिरोते होते हुए जैन समाज के उत्कृष्ट स्वरूप को अभिव्यक्त करते हुए प्रतीत होते हैं। यह जैन मंदिर मध्यकालीन पाली जिले की धरती पर अपने कलेवर में स्थापित होते हुए धर्म के अनूठे रत्न को अपने गर्भ में छुपाए हुए हैं। इन मंदिरों का अद्वितीय सौंदर्य ऐतिहासिक दृष्टि से नित्य नवीनता को प्राप्त होता हुआ प्रतीत होता है। यह सभी जैन मंदिर जैन धर्म का प्रत्यक्ष अनुभव कराने वाले हैं। इन मंदिरों में व्याप्त 24 तीर्थंकरों की ऊर्जाएं संपूर्ण विश्व को अपनी ओर आकर्षित करती हैं। मोहित करती हैं तथा समस्त जैन धार्मिक परंपराओं को जैन संस्कृति के माध्यम से संपूर्ण समाज में हस्तांतरित करती हुई प्रतीत होती है। वास्तव में यह जैन मंदिर भव्य सौंदर्य के हृदयहारी प्रतीक हैं।

REFERENCES

1. **परमानंद शास्त्री - जैन धर्म का प्राचीन इतिहास, भाग 1 & 2, दिल्ली 2001.**
2. **प्रकाश नारायण नाटाणी - अपना राजस्थान, जयपुर 1984.**
3. **नरेंद्र भाणावत (प्रधान संपादक) - जैन संस्कृति और राजस्थान, प्रकाशक सम्यक ज्ञान प्रचारक मंडल, जयपुर 1975.**
4. **पुरातत्व आचार्य मुनि जिनविजय अभिनंदन ग्रंथ - भारतीय पुरातत्व, प्रकाशक मुनि जिनविजय सम्मान समिति, जयपुर 1971.**
5. **स्वामी भागीदड़ रिख्यात राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर 1989.**
6. **त्रिलोकी नाथ चतुर्वेदी - राजस्थान वैभव, भारतीय संस्कृति एवं संवर्धन परिषद, नई दिल्ली 2005.**

7. **पंडित विश्वेश्वर नाथ रेऊ - मारवाड़ का इतिहास, भाग 1, 2 आर्कियोलॉजिकल डिपार्टमेंटल जोधपुर 1938.**

8. **मोहन गुप्ता - जोधपुर जिला सामाजिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, नवभारत प्रकाशन 2004.**

9. **कमलानंद घोष - जैन स्थापत्य एवं कला, भाग 1, 2, 3 भारतीय ज्ञानपीठ 1975**

10. **रामनाथ - मध्यकालीन भारतीय कलाएं एवं उनका विकास, हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर 1973.**

11. **राजेंद्र प्रसाद बागड़ी - राजस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स 2010.**